साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

विकेश निझावन के कथा साहित्य में शैली निरूपण

शर्मिला देवी और डॉ. बीर सिंह

शैली शब्द Style का हिन्दी पर्याय है। रचना पद्धति को शैली कहते है। शैली का निर्माण साहित्यकार के व्यक्तित्व के आधार पर होता है क्योंकि यह भाषा, भावों और विचारों की अनुगामिनी है। जैसा व्यक्ति का व्यक्तित्व होगा और जैसा उसके भाव या विचार होगें वैसे ही उनके वर्णन का ढंग निराला होगा । इस प्रकार के ढंग तरीका, पद्धति या परिपाटी को शैली कहा जाता है। जिस प्रकार संसार में प्रत्येक व्यक्ति आकार, रूप–रंग, विचार–धारणा, चिन्तन रूचि में एक–दूसरे से भिन्न होते हैं, उसी प्रकार उनकी शैलियां भी भिन्न होती है। भाषा व्यक्तिगत नहीं होती, वह तो सामाजिक वस्तु है, लेकिन भाषा को माध्यम बनाकर कहने का ढंग या प्रस्तुतीकररण का तरीका भिन्न–भिन्न होता है। जितने भी संसार में किसी भी भाषा के साहित्यकार है उन सबके व्यक्तित्व अलग–अलग है। उनकी शैली भी निश्चित रूप से अलग–अलग होती है।

''शैली अर्थात प्रस्तुत करने का ढंग काव्य कला का महत्वपूर्ण अंग है। शब्द योजना, वाक्य योजना, भाषा योजना और वस्तु योजना के विलक्षण संयोग को ' शैली कहते है।

इस प्रकार के ढंग, तरीका, पद्धति या परिपाटी को ही शैली कहा जाता है। जिस प्रकार संसार में प्रत्येक व्यक्ति आकार रूप–रंग, विचार–धारणा, चिन्तन, रूचि में एक दूसरे से भिन्न होते है, उसी प्रकार उनकी ' शैलियां भी भिन्न होती है। भाषा के माध्यम का तोर तरीका अलग–अलग है।

''शैली का अर्थ है अभिव्यक्ति का निजी वैशिश्ट्य जिसके द्वारा ' शब्द का प्रयोग वैदिक साहित्य में मिलता है। शैली शब्द की व्युपत्ति संस्कृत की ' शील धातु से मानी जाती है।

रचनाकाार ने अपने कथा साहित्य में उच्च कोटि की शैली का प्रयोग किया । ' शोध की सीमा के चिन्तन को मूल की दृष्टि में रखकर विकेश निझावन जी की निम्न शैलियां पर विचार करना उपयुक्त होगा ।

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

वर्णनात्मक शैली:–

कहानीकार अपनी रचनाओं में अनेक प्रकार की शैलियों का आश्रय लेता है। उसी में से एक शैली का नाम वर्णनात्मक हैं जिसमें अपने समग्र कथा साहित्य में विभिन्न शैलियों को निरूपित किया हुआ है।

''एकाएक इसे लगा था वह पूरी तरह से ढह गई है कल उस व्यक्ति का चित्र अत्यन्त सुन्दर एंव भव्य था । वह कांच की तरह का महल अति उपयोगी था ।

इस प्रकार वर्णनात्मक शैली का सम्बन्ध भूगोल या स्थानों के साथ होता हैं साहित्यकार अपने भावों और विचारों को इस शैली में विस्तार देता हैं ।

विवरणात्मक शैली :–

विवरणात्मक शैली का सम्बन्ध ऐतिहासिक प्रणाली के साथ होता है। तिथिवार या क्रमवार जब हम किसी का चित्रण करते है, वह विवरणात्मक शैली कहलाती है। रचनाकार ने अपने कथा साहित्य में सफल ढंग से विवरणात्मक शैली का प्रयोग किया है।

लाजो शम्भु जी से बोलती है –– '' पूरी रात का सफर था। आंख लग जाये तो घण्टे भी मिनट बन जाते हैं। बीच में थोड़ी देर के लिए दूसरी औरत की आंख भी लग गयी थी। लेकिन एक झटके से उसकी आंख खुली तो उसने सामने बैठे उस दुबले–पतले नौजवान से टाइम पूछा ।

''साढे चार बनजे वाले है।'' उसने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखते हुए कहा । रामपुर आ गया ।

विचारात्मक शैली :–

विचारात्मक शैली को वैज्ञानिक शैली भी कहा जाता है। इसमें विचार विश्लेषण और चिन्तन की प्रधानता रहती है। इस प्रकार की शैली को दार्शनिक शैली कहा जाता है। विचारात्मक शैली में सर्वत्र गम्भीरता रहती है। रचनाकार ने विचारात्मक शैली को अपने कथा साहित्य में गम्भीरता से निरूपित किया –

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

''दरसल बतलाने वाले ने उसे जितनी गम्भीरता से कहा उसे वह इस तरह हंसी में नहीं टाल सकता था उसने बड़ी सहजता से होठों पर एक अनचाही मुस्कान ओढ़ते हुए पूछा था।''

उपदेशात्मक शैली :–

उपदेशात्मक शैली में उपदेश दिया जाता है जिसके फलस्वरूप भक्त या अनुयायी उस पर आचरण करते हैं। अपने जीवन को सुधारते है। क्योंकि समाज में उपदेश देकर अपना नाम कमाना अर्थात लोकमंगल की कामना करना ।

''सच कह अतुल, इन्सान अपने लिए भी जीता है कभी दूसरों के लिए तो जीना सीखो।''

संवाद शैली :–

संवाद शैली द्वारा पात्रों का चरित्र–चित्रण होता है। संवाद शैली में दो या दो से अधिक पात्र परस्पर वार्तालाप करके कथानक को आगे बढ़ाते है। संवादों में नोक–झोंक भी होती है और मैत्री भी । कथाकार ने अपने समग्र कथा साहित्य में पात्रों के आपसी संवादों का सटीक रूप में सफल चित्रण किया और शैली को सही ढंग से निरूपण किया है।

''क्या समझ में आ गया है ? श्रवण ने बात पर दबाव दिया था।
''अरे सावित्री मेरे गांव की तो है, तुझे पता है ना।
''हां बुआ ने बताया था एक बार ।''
''तुझसे तो धोखा हुआ था रे ।
सावित्री बोली अरे बेटा तुम्हारे पास क्या है।
यही तो गम खा गया उसे । एकाएक चाची रूआंसी हो गई । तेरी बुआ तो अब चली गई । तेरा सारा दुख अब मैं झेलूगी ।
वह नहीं बदलगा रे ।''
क्या मतलब ?
तेरी बुआ कहती थी, जैसा बीज होता है, वैसा ही फल आता है।

बहुत परेशान हो। ' श्वेता को खामोश देख वह ही बोला ।
हां शायद राम हम तो परेशान कहां है।
कहा न।''

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

प्रश्नोत्तर शैली :–

इस शैली में एक प्रश्न करता है और दूसरा उत्तर देता है। प्रश्नोत्तर शैली, संवाद शैली और नाटकीय शैली से मिलती जुलती है। इस शैली में जिज्ञासा शांत होती है। रचनाकार ने अपने पात्रों के माध्यम से समग्र कथा साहित्य में प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया है।

''अरूण दा, आय यहां कैसे? एक फीकी मुस्कुराहट चेहरे पर लाते हुए मैने पूछा ।
दोस्त के भाई की शादी थी । बारात के साथ आया था ।
तो फिर आज तो रूकोगे ना । ?
शायद ही रूकूं । प्रोग्राम तो ————————?
अरे–अरे ! रूकेगा तो क्यों नहीं अभी तो कह रहा था, दो दिन की छुट्टी लेकर आया हूं ।''

''आईने में कभी कद–बुत देखा अपना ?
ओ अभी, बिन्नी मुस्कुराती बोली ।
इस प्रकार बिन्नी की आंखे और भी फैल गयी थी।
''तो और कौन टूठेगा ?
मैं खुद ही चली आउंगी ।''

रंजी सुबह की दरवाजा बन्द किये अपने मकान में चुपचाप बैठी है ओर अपनी बातों को तौर तरीके से सोच विचार कर रही थी।

'' क्या बात हूं ? मैं तल्खी से बोली ।
क्या मैं तुम्हारे कहने पर तैयार होउंगा ।''

चित्रात्मक शैली:–

चित्रात्मक शैली में भाषा चित्रमयी होती है। रचना पढ़ने से उसका चित्र आंखो के सामने आ जाता है ।

''सामने एक छोटा सा बरामदा था, जिसके बाई और हैंड पम्प लगा था। हैंडपम्प के नीचे बर्तनों का ढेर था, जिनपर एक बुढ़िया झुकी हुई थी उन्हें साफ कर रही थी। ''

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

निष्कर्ष :–

इस प्रकार से रचनाकार ने अनेक शैलियों का सफलतापूर्वक अपने समग्र कथा साहित्य में निरूपण किया है। सम्बोधन शैली, उद्धरण शैली, विवेचनात्मक शैली और सूत्रात्मक शैली के भी दर्शन होते है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कथाकार एक मंजे हुए और सफल शैलीकार है।

संदर्भ संकेत :–

1. पं. सीताराम चतुर्वेदी, शैली और कौशल, पृष्ठ संख्या – 42
2. डॉ0 भोलानाथ तिवारी, शैली विज्ञान, पृष्ठ संख्या, !!
3. विकेश निझावन, कोई एक कोना, पृष्ठ संख्या, 21
4. वही, गठरी, पृष्ठ संख्या, 16
5. वही, अब दिन नहीं निकलेगा, भूत, पृष्ठ संख्या, 36
6. वही, अब दिन नहीं निकलेगा, पृष्ठ संख्या 125
7. वही, कोई एक कोना, बीज, पृष्ठ संख्या – 28, 29
8. वही, अब दिन नहीं निकलेगा, पृष्ठ संख्या 61
9. वही, हरछत का अपन दुख, पृष्ठ संख्या –26
10. वही, महादान, पुत्र के दूसरी ओर, पृष्ठ संख्या 76
11. वही, पृष्ठ संख्या 77
12. वही, गठरी, स्पर्श पृष्ठ संख्या, 25